1 A

फ्रांसिस बेकन

- -> इंग्लैंड निवासी
- -> पुनर्जागरणकालीन
- -> प्रसिद्ध निबंधकार

1 B

सराजेवो

- -> बोस्निया की राजधानी
- -> सराजेवो मे आस्ट्रिया के राजकुमार फर्डिनेंड की हत्या की गई थी (28 जून 1914)
- -> यूरोपीय देश

1 C

ट्रॉटस्की

- -> रूस निवासी
- -> लाल सेना का संगठन किया
- -> अक्टूबर 1917 क्रांति मे लेनिन का सहयोग

1 D

नागार्जुन

- -> प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्री
- -> शून्यवाद (सापेक्षता) का सिद्धांत दिया।
- -> भारत का आइंस्टीन कहा जाता है।

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

1 F

एलोरा का कैलाश मंदिर

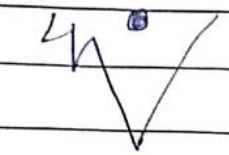

4

→ औरंगाबाद (महाराष्ट्र) मे स्थित
→ एकाश्मक पर्वत को काटकर बनाया गया प्रसिद्ध मंदिर
→ राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण I द्वारा बनवाया था।

1 G

अबुल फजल

→ अकबर के नौ रत्नो मे शामिल
→ अकबरनामा ग्रंथ की रचना की।
→ दीन ए इलाही के प्रधान पुरोहित

1 H

गज ए-सिकंदरी

→ गज-एक-सिकंदरी की शुरुआत सिकंदर लोदी ने की
→ भूमि मापन की प्रमाणिक मापक
→ 30 अंगुल मापक

1 I

देवेन्द्रनाथ टैगोर

→ भारतीय पुनर्जागरण कालीन समाज सुधारक।
→ ब्रह्म समाज को नेतृत्व प्रदान किया।
→ 1843 मे तत्वबोधिनी सभा की स्थापना

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

1 J

गुरुवायूर सत्याग्रह

→ नेतृत्वकर्ता – के केलप्पन
→ स्थान – मालाबार (केरल)
→ उद्देश्य – अछूतों का मंदिर प्रवेश एवं सामाजिक समानता की स्थापना

1 K

ईसुरी

→ जन्म उत्तरप्रदेश (बुंदेलखंड)
→ प्रमुख देन – फाग का आविष्कार
→ बुन्देलखंडी साहित्यकार

1 L

धोडाडोंगरी सत्याग्रह

① 1930 में मध्यप्रदेश में नमक सत्याग्रह के साथ साथ बैतूल (धोडाडोंगरी) में सम्पन्न किया गया।
② नेतृत्वकर्ता – गंजन सिंह कोरकू
बंजारी सिंह कोरकू

1 M

भारत भवन

① स्थापना – 1982
② वास्तुकार – चार्ल्स कुरियन
③ भारत भवन के 6 अंग के माध्यम से सांस्कृतिक गतिविधियों का संरक्षण व संवर्धन।

Scanned by CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

1 H

एडोल्फ हिटलर

① जर्मन मे नाजीवादी नेता
② 1 सितंबर 1939 को पोलैण्ड पर आक्रमण, द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत
③ वर्साय की संधि का 1935 के बाद से उल्लंघन

1 0

① विश्व विरासत स्थल सांची के स्तूप (रायसेन)
② मांडू-मालवा (धार)
③ भरहुत (सतना)
④ देउर कोठार (रीवा)
⑤ बाघ की गुफा (धार)

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

3 (D)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे गांधीजी व कॉंग्रेस द्वारा तीन महत्वपूर्ण आंदोलन शुरू किए गए —

(1) असहयोग आंदोलन (1920-22)

(2) सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

(3) भारत छोड़ो आंदोलन (1942-44)

अन्य दो आंदोलन की तुलना मे भारत छोड़ो आंदोलन भिन्न था जिसे लेकर इतिहासकारो मे मतभेद है।

(1) नियोजित आंदोलन →

→ कांग्रेस के नेता आंदोलन की रूपरेखा पहले से तैयार करते थे व अधिवेशनो मे प्रस्ताव द्वारा स्वीकृत करते थे। जैसे असहयोग – नागपुर अधिवेशन

→ कांग्रेस के शीर्ष नेता रूपरेखा तैयार कर उसे वितरित कर देते थे।

→ शीर्ष नेताओं के गिरफ्तार होने पर द्वितीय पंक्तियो के नेताओ द्वारा मोर्चा संभालना

उदा. → सविनय अवज्ञा आंदोलन मे अब्बास तैयबजी व तैयबजी के गिरफ्तार होने पर सरोजनी नायडू द्वारा धरसना का नेतृत्व संभाला

इसी प्रकार

→ कांग्रेस ने वर्धा समिति सम्मेलन द्वारा इसे पास किया

→ 9 अगस्त 1942 को शीर्ष नेताओ

Scanned by CamScanner

गांधीजी, नेहरू, राजगोपालाचारी आदि के गिरफ्तार होने पर द्वितीय पंक्ति के नेता अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, आर. पी. गोयनका, राममनोहर लोहिया, बीजू पटनायक आदि

लेकिन कुछ इतिहासकार इसे स्वतः स्फूर्त मानते हैं
(i) आंदोलन में बड़े स्तर पर हिंसक घटना, रेलवे, डाक, तार-संचार आदि को नुकसान इसे गांधीवादी आंदोलनों से दूर करती है

(ii) कई जगहों पर ब्रिटिश सरकार को अपदस्थ कर समांतर सरकार की स्थापना
(i) मेदिनीपुर (तामलुक) — जातीय सरकार
(2) महाराष्ट्र — प्रति सरकार

(3) कई पार्टियों द्वारा समर्थन न करना
(1) हिंदू महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
(2) मुस्लिम लीग
(3) भीमराव अम्बेडकर ने इस आंदोलन से दूरी बनायी
(4) समाजवादी पार्टी

Scanned by CamScanner

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस आंदोलन को न ही कांग्रेस का साथ मिला और न ही किसी अन्य पार्टी का साथ। फिर भी इस आंदोलन ने ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें हिला दीं।

लार्ड लिनलिथगो ने दमनात्मक कार्यवाही करते हुए 10000 भारतीयों को जेल में डाल दिया।

उपरोक्त कारणों से ~~इससे~~ स्पष्ट है कि भारत छोड़ो आंदोलन एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन था।

29.7 X 21 cms size
A4 Spiral

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

3 B

अशोक मौर्य वंश का शासक था जिसका शासन काल 269 ई.पू. से 232 ई.पू. तक रहा। अशोक को महान सम्राटो मे भी महान सम्राट निम्न कारणों से कहा जाता है।

मुख्य कारण :-

(I) अशोक की धम्म की नीति

→ अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात भेरी घोष की नीति त्याग कर धम्म की नीति का अनुसरण किया।

→ अशोक का धम्म नैतिक नियमो की संहिता थी।

→ उद्देश्य :- शांति, प्रेम, बंधुत्व सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जगाकर, विशाल साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करना।

→ इसकी जानकारी बृहद् व लघु अभिलेख से प्राप्त होती है।

अशोक का धम्म

"किंतु धम्मे"

"अपामिनवे बहुक्याने दयादाने सच्चे सोच्चये माधवे साधवे च"

Scanned by CamScanner

अन्य कारण

(1) कुशल प्रशासक →
→ अशोक अपनी प्रजा का हित सर्वोपरि मानता था।
→ उसके शासन काल में एक भी प्रजा विद्रोह न होना उसके कुशल प्रशासक का परिचायक है।

(2) साम्राज्य विस्तार → अशोक ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया एवं उसे सुदृढ कर शांति व्यवस्था कायम की।

(3) राजनयिक संबंध →
→ अशोक ने भेरीघोष को त्याग धम्म की नीति अपनायी।
→ अपने पड़ोसियों से धम्म के आधार पर राजनयिक संबंध स्थापित किए
→ इस उद्देश्य हेतु कई प्रचारक-प्रचारक को अन्य देशों की यात्रा पर भेजा।

Scanned by CamScanner

(4) जनकल्याण कारीकार्य → अशोक द्वारा जन कल्याण के कई कार्य किए गए जैसे → कुएं, सरायों, तालाबों, अस्पतालों का निर्माण
→ गरीबों का मुफ्त मे इलाज।

(5) निर्माणकर्ता → अशोक द्वारा कई निर्माणकार्य करवाए गए।
[उदा] → साँची का स्तूप, भरहुत का स्तूप,
→ जनश्रुती के अनुसार इसने 84000 स्तूपो का निर्माण करवाया।

उपरोक्त तथ्यो का विश्लेषण करने पर ऐसा जान पड़ता है कि अशोक अपनी युद्ध विजयो के कारण नहीं अपितु अपनी धम्म की नीति के कारण भारत के महान सम्राटो मे भी सम्राट कहलाया।

Scanned by CamScanner

3 A

1789 में फ्रांसीसी क्रांति फ्रांस की निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजनीतिक सत्ता के विरुद्ध एक क्रांति थी। जिसका मुख्य उद्देश्य था —

1. समानता
2. स्वतंत्रता
3. बंधुत्व

फ्रांसीसी क्रांति की सफलता / असफलता इसके उद्देश्यों के आधार पर की जा सकती है —

1. समानता :
   → फ्रांसीसी समाज के विशेषाधिकार प्राप्त तथा विशेषाधिकार विहीन जन्मजात अधिकार को समाप्त कर दिया गया।
   → किन्तु आर्थिक आधार पर क्रियाशील व अक्रियाशील वर्गों का निर्माण किया गया।
   → महिलाओं, बच्चों व बुजुर्गों को अक्रियाशील वर्ग में रखा गया।

2. स्वतंत्रता →
   1. राजतंत्र को समाप्त कर संविधान सभा का गठन किया गया।

Scanned by CamScanner

→ किन्तु नेपोलियन के काल (1799 से 1813) तक पुनः राजतंत्र की पुरातन व्यवस्था लागू की गई।

③ बंधुत्व →

→ फ्रांस की क्रांति मे बंधुत्व का सिद्धांत इसका महत्वपूर्ण पक्ष था, जिससे

→ जिससे क्रांति का प्रसार अन्य देशो मे भी किया गया व विश्व बंधुत्व की अवधारणा पेश की गई।

→ किन्तु नेपोलियन के समय निरंतर युद्ध ने यूरोप मे अराजकता का माहौल पैदा किया।

अतः उपरोक्त उद्देश्यो को संतुलित, व्यापक विश्लेषण करने पर कहा जा सकता है कि फ्रांस की क्रांति ने तत्कालीन विषमतावादी सामाजिक ढाँचे को समाप्त कर समतामूलक समाज का विचार पेश किया तथा अन्य देशो को भी निरंकुश व स्वेच्छाचारी शासको से स्वतंत्रता के लिए आंदोलित किया। तथा इस आंदोलन उन राष्ट्रो

Scanned by CamScanner

का साथ देकर विश्व बंधुत्व की स्थापना की।
निःसंदेह फ्रांस की क्रांति ने विश्व को समानता, स्वतंत्रता, तथा बंधुत्व का पाठ पढ़ाकर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति मे सफल माना जा सकता है।

2 A. नेपोलियन 1799 से 1813 मे फ्रांस की क्रांति को नेतृत्व प्रदान करता है। कुछ इतिहासकार नेपोलियन को क्रांति पुत्र भी कहते है।

कारण

(1) क्रांतिजन्य परिस्थिति मे उदय :— क्रांतिजन्य परिस्थितियों अराजकता, अशांति आदि ने नेपोलियन को जन्म दिया।
"यदि क्रांति न होती, तो मैं भी नही होता।" — नेपोलियन

(2) क्रांति के उद्देश्यो का प्रचारक :— क्रांति के उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता, एवं बंधुत्व का एक पीढ़ी से दूसरी ~~पीढ़ी~~ पीढ़ी मे पहुंचाना।
(1) समानता :— विशेषाधिकारों की समाप्ति को जारी रखा
(2) स्वतंत्रता :— गणतंत्र की स्थापना के लिए कोडबिल का निर्माण।
(3) बंधुत्व :— क्रांतिकाल मे लड़े गए रक्षात्मक युद्ध

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट होता है कि नेपोलियन को क्रांतिपुत्र कहना युक्तियुक्त होगा।

का साथ देकर विश्व बंधुत्व की स्थापना की। नि:संदेह फ्रांस की क्रांति ने विश्व को समानता, स्वतंत्रता, तथा बंधुत्व का पाठ पढ़ाकर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल माना जा सकता है।

2 नेपोलियन 1799 से 1813 में फ्रांस की क्रांति को नेतृत्व प्रदान करता है। कुछ इतिहासकार नेपोलियन को क्रांति पुत्र भी कहते हैं।

कारण

(1) क्रांतिजन्य परिस्थिति में उदय :— क्रांतिजन्य परिस्थितियों अराजकता, अशांति आदि ने नेपोलियन को जन्म दिया।

"यदि क्रांति न होती, तो मैं भी नहीं होता।" नेपोलियन

(2) क्रांति के उद्देश्यों का प्रचारक :— क्रांति के उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता, एवं बंधुत्व का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचाना।

(1) समानता :— विशेषाधिकारों की समाप्ति को जारी रख[illegible]

(2) स्वतंत्रता :— गणतंत्र की स्थापना के लिए कोडि[illegible] का निर्माण।

(3) बंधुत्व :— क्रांतिकाल में लड़े गए रक्षात्मक [illegible]

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि नेपोलियन को क्रांतिपुत्र कहना युक्तियुक्त होगा।

Scanned by CamScanner

का साथ देकर विश्व बंधुत्व की स्थापना की।

नि: संदेह फ्रांस की क्रांति ने विश्व को समानता, स्वतंत्रता, तथा बंधुत्व का पाठ पढ़ाकर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति मे सफल माना जा सकता है।

2 A

नेपोलियन 1799 से 1815 मे फ्रांस की क्रांति को नेतृत्व प्रदान करता है। कुछ इतिहासकार नेपोलियन को क्रांति भी कहते है।

[कारण]

(1) क्रांतिजन्य परिस्थिति मे उदय :— क्रांतिजन्य परिस्थितियों अराजकता, अशांति आदि ने नेपोलियन को जन्म दिया।

"यदि क्रांति न होती, तो मैं भी नही होता।"
नेपोलियन

(2) क्रांति के उद्देश्यो का प्रचारक :— क्रांति के उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता, एवं बंधुत्व का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मे पहुंचाना।

(1) समानता :— विशेषाधिकारों की समाप्ति को जारी रखा

(2) स्वतंत्रता :— गणतंत्र की स्थापना के लिए नीतियों का निर्माण।

(3) बंधुत्व :— क्रांतिकाल मे लडे गए रक्षात्मक युद्ध

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट होता है कि नेपोलियन को क्रांतिपुत्र कहना युक्तियुक्त होगा।

(प्रश्न) 2 B

" वर्साय की संधि, संधि नहीं बल्कि 20 वर्षों का युद्ध विराम थी।"

मार्शल फॉच

कारण

① आरोपित संधि :- वर्साय की संधि जर्मन के ऊपर थोपी गई संधि थी।

② अपमानजनक प्रावधान :- प्रादेशिक, सैन्य व आर्थिक व्यवस्था द्वारा जर्मन को छिन्न-भिन्न कर सैन्य व आर्थिक रूप से पंगु बनाने के प्रावधान।

③ प्रतिशोधात्मक संधि => वर्साय की संधि विजेता राष्ट्रों द्वारा अपने स्वार्थ सिद्धि व पुरानी शत्रुता का प्रतिशोध लेना थी।

उदा. अल्सास लॉरेन जर्मनी से छीनना।

④ विश्वासघाती प्रावधान => वुड्रो विल्सन के 14 सूत्री उद्देश्यों का नदारद रहना।

किसी स्वाभिमान राष्ट्र के लिए इन शर्तों को मानना नामुमकिन था। अंतत: हिटलर का जन्म हुआ और उसने एक के बाद एक संधि शर्तों का उल्लंघन कर विश्व युद्ध की शुरुआत की।

Scanned by CamScanner

(vii) ~~बौद्ध धर्म की देन~~

28 बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध द्वारा 6वी शताब्दी ई पू में की गई थी, जिनकी समाज को देन निम्न लिखित है —

1. सामाजिक :- (i) वर्ण व्यवस्था का विरोध
   (ii) महिलाओं व शूद्रों के प्रति सहानुभूति
   (iii) ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को चुनौती।

2. आर्थिक :- (i) दान लेना नहीं करना
   (ii) पशुहत्या की निंदा
   (iii) दासों को, कर्जदारों व सैनिकों को संघ स्वीकृति पर प्रवेश।

3. राजनीतिक क्षेत्र
   (i) सत्य, अहिंसा का
   (ii) जिन राष्ट्रों में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ उनसे मधुर संबंध स्थापित हुए इथा भूटान, श्रीलंका।

4. साहित्य और संस्कृति
   (i) पालि भाषा का विकास
   (ii) बौद्ध विहारों, मठों, स्तूपों का निर्माण
   (iii) गांधार शैली का विकास।

इस प्रकार बौद्ध धर्म ने सिर्फ सामाजिक क्षेत्र को प्रभावित किया अपितु आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया।

Q11.

२८ भारत पर ७वी - ८वी शताब्दी के मध्य अरबो का आक्रमण हुआ जिसका भारत पर नि० लि० प्रभाव पड़ा।

① राजनीतिक प्रभाव :- (i) स्थानीय शक्तियो का उदय हुआ :- गुर्जर प्रतिहार-पाल, राष्ट्रकूट

② शिक्षा व साहित्य :- (i) दर्शनशास्त्र, चिकित्सा गणित का ज्ञान अरबो को हुआ। (ii) भारत मे स्थानीय साहित्यो का विकास

③ अर्थव्यवस्था :- पश्चिमी देशो व अफ्रीका से व्यापार का विस्तार।

④ सांस्कृतिक :- पर्दा प्रथा, बाल विवाह जौहर का प्रचलन बढ़ा

⑤ सांस्कृतिक प्रभाव :- गुंबद व मेहराब का स्थापत्य पर प्रभाव

अरबो ने भारत पर व्यापक प्रभाव डाला जिसका प्रभाव भारत की ऐतिहासिक इमारतो व समाज मे देखा जा सकता है।

Scanned by CamScanner

(a||) अकबर ने राजपूतो से शत्रुता की जगह मित्रता की नीति अपनायी।

[2F]

विशेषता :—

(1) वैवाहिक संबंध => साम्राज्य के आधार को मजबूत करने हेतु वैवाहिक संबंध किए।

(उदा) → आमेर के कच्छवाह
→ जैसलमेर के भाटी

(2) पुरस्कार व दंड नीति

→ भगवान दास, मानसिंह को ऊँचे पद दिए
→ जिन्होंने अधीनता नहीं स्वीकारी उनके साथ युद्ध

[उदा] महाराणा प्रताप

(3) उदार धार्मिक दृष्टिकोण

→ हिन्दू धर्म के प्रति उदार धार्मिक दृष्टिकोण

[उदा] → तीर्थ यात्रा कर समाप्त (1563)
→ जजिया कर समाप्त (1564)

निःसंदेह अकबर की राजपूत नीति साम्राज्य विस्तार व उसके सुदृढीकरण से संबंधित थी, जो सफल रही।

Scanned by CamScanner

(91)

(29) धन निष्कासन का सिद्धांत' दादा भाई नौरोजी द्वारा दिया गया। जिसके अनुसार भारत का हर संभव हर जगह से धन का निष्कासन ब्रिटेन की तरफ हुआ।

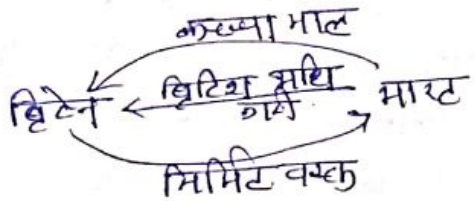

<u>प्रभाव</u> :—

① भारत के कच्चे माल का ब्रिटिश को ~~अत~~ निर्यात करने हेतु भारत के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया।

② ~~जमींदारी~~, कई ~~प्रथा~~ - प्रथाओं द्वारा किसानों का शोषण।

③ ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं द्वारा भारतीय वस्तुओं को प्रतिस्पर्धा तथा अंतत: पतन।

④ भारत के पैसे से ही ब्रिटिश अधिकारियों की नियुक्ति तथा भारतीय सेना का निर्माण।

जर ~~अत~~

इस प्रकार धन निष्कासन सिद्धांत ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीति का पर्दाफाश कर दिया।

Scanned by CamScanner

(ख) आर्य समाज की स्थापना व स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। विस्तृत योगदान नि. टि. दी

[२५]

योगदान

① राजनीतिक :— ① स्वराज का प्रयोग किया
② हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना

② सामाजिक ① बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा का विरोध
② जाति व्यवस्था / अस्पृश्यता का अंत।

③ धार्मिक :— ① ब्राह्मणो के जन्मजात अधिकारो को चुनौती।
② वेदो का पुनरुत्थान

④ शैक्षिक :— ① सामान्य जन की भाषा के लिए हिन्दी भाषा का विकास।

भारतीय पुनर्जागरण काल मे तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक एक विशाल आंदोलन रूढ़ित व कुरीतियो के प्रति उनका पुरजोर विरोध किया।

Scanned by CamScanner

(21)

[2]

मध्यप्रदेश मे धार्मिक स्थलो मे जैन, बौध्द, हिन्दू इस्लाम आदि धर्मों के दर्शनीय व ऐतिहासिक स्थल मौजूद है।

जैन धर्म के तीर्थ स्थल

(1) बावनगजा :- स्थिति - बड़वानी

विशेष :- भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा।

(2) मुक्तागिरी :- स्थिति - बैतूल

विशेष :- गुफा मंदिर, पहाडो को काटकर बनाए गए।

(3) गोम्मट गिरी :- स्थिति - इन्दौर

विशेष :- आदिनाथ, पार्श्वनाथ की मूर्तियां।

(4) पावगिरी :- स्थिति - खरगौन

विशेष :- दिगम्बर जैन मंदिर

अन्य :- पुष्पगिरी - देवास

सोनगिरी - दतिया

Scanned by CamScanner

(व)

2K

भगतसिंह पंजाब और भारत के प्रमुख क्रांतिकारी थे इनके योगदान का विश्लेषण इनके कार्यों से किया जा सकता है।

कार्य

(1) राष्ट्रीय कॉलेज मे सहपाठियो के बीच राष्ट्रीयता का प्रचार।

(2) 1928 मे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की।

(3) ~~साइमन कमीशन~~ लाहौर के तत्कालीन सहायक पुलिस कप्तान सॉण्डर्स की हत्या।

(4) पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध मे बटुकेश्वर के साथ 1929 को केंद्रीय असेंबली की खाली बेंचो मे बम फेंके।

(5) जेल मे राजनैतिक बंदियो के अधिकारो के लिए भूख हड़ताल।

इस प्रकार भगतसिंह ने अपनी अंतिम सांस तक भारत की स्वतंत्रता के लिए अपनी आवाज बुलंद की।

Scanned by CamScanner

(2D)

8-वी – 13वी शताब्दी का काल राजपूत काल कहलाता है। वस्तुतः इस काल मे अनेक छोटे-बड़े राजपूत राज्यो की स्थापना हुई थी। राजपूतो के पतन के कई कारणो मे से मुख्यतः सामंतवाद को माना जाता है।—

कारण

(1) सामंती प्रथा मे राजपूत राज्य एक-दूसरे से हमेशा प्रतिस्पर्धा करते थे। जिससे इनमे एकता की भावना का विकास नही हुआ।

(2) छोटे-बड़े राज्यो के कारण प्रभावी सेना व बड़ी व सुसंगठित सेना का अभाव।

(3) अयोग्य व अदूरदर्शी शासक :— बाबर को भारत पर आक्रमण करने का न्यौता देना।

(4) एक समान व व्यवस्थित आर्थिक व प्रशासनिक ढाँचे का अभाव।

निष्कर्ष : इस प्रकार राजपूतो की सामंती व्यवस्था ही इनके साम्राज्य के अंत का कारण बनी।

Scanned by CamScanner

(स)

PART B

1A

क्षारीय मृदा

- मृदा की PH वेल्यू 7 से अधिक होती है।
- खेती के लिए अनुपयुक्त
- क्षारीय मृदा एल्मी भूम देखने को मिलता है।

1B

शिलांग पठार

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रायद्वीप भारत के पठार का विस्तार
- मालदा गैप द्वारा छोटा नागपुर पठार से अलग
- प्रमुख शहर - शिलांग, चेरापूंजी आदि
  आदिवासी जनजातियों के नाम पर गारो, खासी, जयंती पहाड़िया

1C

भूकम्प के लाभ

① आकस्मिक भ्रंशन से मूल्यवान खनिज धरातल पर आ जाते हैं।

② झीला, नदियों का उद्गमन

③ पर्वतों का निर्माण, जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

Scanned by CamScanner

1D **अश्व अक्षांश**

- दोनो गोलार्द्धों मे 30° - 35° अक्षांश के मध्य
- पवन संचार अर्थात मंद, होने के कारण जलयान आगे नही बढने पर अश्व को बीच समुद्र मे फेंक कर जलयानो का भार कम किया जाता था।

1E **जूनागढ**

1F **बंगाल का शोक**

- दामोदर नदी मे आने वाली बाढो के कारण इसे बंगाल का शोक कहा जाता था।
- दमोदर का उद्गम छोटा नागपुर पठार से उदगम — इसकी सहायक बराकर नदी।

1G **म० प्र० मे 75 सेमी. से कम वर्षा क्षेत्र**

- उत्तर - पश्चिम म० प्र०, जैसे मंदसौर, नीमच, धार, रतलाम आदि
- कारण :- मानसून मे आर्द्रता की कमी।

Scanned by CamScanner

1h **भेल भोपाल**

- द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे ब्रिटेन के सहयोग से 1964 मे स्थापित
- निर्माण :- [illegible], ट्रांसफार्मर, टर्बाइन आदि
- नवरत्न कंपनियों मे शामिल

1i **बावनथड़ी परियोजना**

- म॰प्र॰ व महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना
- बालाघाट जिले मे स्थित, बावनथड़ी नदी पर
- म॰प्र॰ के बालाघाट व सिवनी जिलों को लाभ

1j **सोहागपुर कोयला क्षेत्र**

- शहडोल जिले मे स्थित
- राज्य का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र
- सोनहट, कोरिया क्षेत्र सम्मिलित है।

1k **ऑपरेशन फ्लड**

- ऑपरेशन फ्लड का संबंध - दुग्ध से है।
- वर्गीज कुरियन को श्रेय जाता है।
- इसे 'श्वेत क्रांति' भी कहा जाता है।

Scanned by CamScanner

(1L) **प्रमुख रोपण फसल**

↳ रबर, काफी, काजू

(1M) **सूखा प्रभावित क्षेत्र**

↳ भारत का मरुस्थल, पश्चिमी भारत, तमिलनाडु का वर्षा छाया प्रदेश

↳ 50 सेमी से भी कम बारिश के क्षेत्र को सूखा प्रभावित क्षेत्र कहा जाता है।

(1N) **आपदा प्रबंधन अधिनियम**

↳ आपदा के प्रबंधन हेतु 2009 से लागू

↳ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की स्थापना सांविधिक निकाय के रूप में की गई

↳ राष्ट्रीय आपदा प्रबंध संस्थान की स्थापना

(1O) **पेयजल की गुणवत्ता के मापदण्ड**

↳ जल के PH का मान 6.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए।

↳ BOD कम होना चाहिए।

↳ आर्सेनिक, फ्लोराइड, आदि अशुद्धियाँ नहीं होना चाहिए।

Scanned by CamScanner

38

म० प्र० मे भारत की सर्वाधिक जनजातियाँ निवास करती है। जो अपनी प्राचीन व महत्वपूर्ण विशेषताओ को आज भी समाहित किए हुए है।

म० प्र० की जनजातियाँ व उनकी विशेषताएं

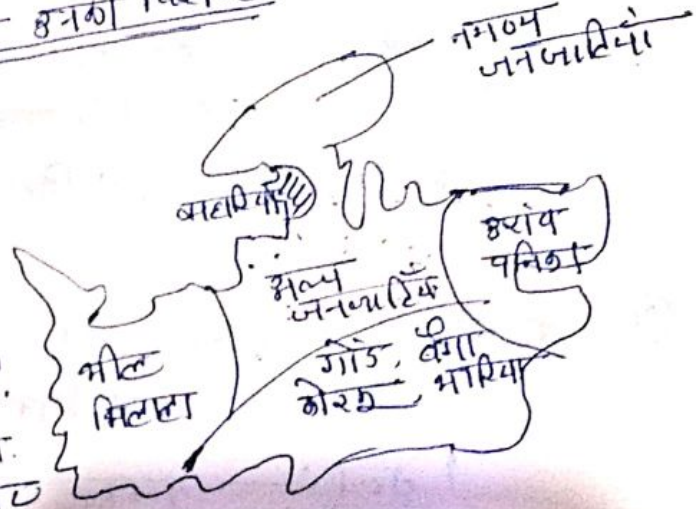

(1) भील :— म० प्र० मे भील जनजातियो की जनसंख्या अधिक है।

स्थान :— पश्चिमी म० प्र० मे झाबुआ, बड़वानी, धार आदि

विशेषता ⇒

→ धनुष विद्या मे कुशल होते है।

→ इनके निवास स्थान को 'फाल्या' कहा जाता है।

नृत्य → गोल - गधेड़ो,

पर्व → भगोरिया, जातरा, चलावणी

(2) गौंड :→ म० प्र० की दूसरी बड़ी जनजाति।

नृत्य :— करमा, सैला, भड़ौनी।

पर्व :— हरडिली, नवाखानी, बिदरी, जवारा

विवाह :— दूध लौटावा, लमसेना विवाह।

स्थान :— मुख्य रूप से मण्डला, जबलपुर क्षेत्र।

Scanned by CamScanner

③ **बैगा** :— भारत सरकार ने इन्हें आदिम जाति में शामिल किया है।

स्थान :— म. प्र. के दक्षिण क्षेत्र में।

नृत्य :— करमा, सैला, परधोन

पर्व :— हिन्दू धर्म से प्रभावित, हरताविका, दिवाली, भाई-दूज।

विशेष :— 'भाट' स्त्रियाँ की पूजा कुल देव के रूप में करते हैं।

④ **सहरिया** :— भारत सरकार द्वारा आदिम पिछड़ी जाति घोषित

क्षेत्र :— गुना, शिवपुरी, ग्वालियर।

नृत्य :— कुल्हड़ घोड़ी लहंगी।

⑤ **भारिया** :— निवास छिंदवाड़ा के पातालकोट में।

नृत्य :— सैला, सैतम, करमा।

प्रमुख देवता :— बूढ़ादेव, दुल्हा देव

→ भारत सरकार द्वारा वि. आदिम पिछड़ी जाति घोषित।

⑥ **कोरकू** :— म. प्र. के दक्षिण में बैतूल, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद, हरदा क्षेत्र।

→ नृत्य — थापटी
→ विवाह — लमझना, पिथोरा, राजी-बाजी विवाह।
→ परिवार और समाज इनके प्रति सम्मानित करते हैं।

उरांव ⇒ सीधी, सिंगरौली, अनूपपुर क्षेत्र मे निवास
→ मुख्य कार्य खेती मजदूरी।
→ नृत्य → सरहुल, करमा, ह
→ विवाह ⇒ बन्दवा, वधु मुल्य

म० प्र० की जनजातियों के विकास के साथ इनकी संस्कृति को महत्व देते हुए वर्तमान सरकार द्वारा इनके पूज्नीय / पवित्र स्थनो को पर्यटन के विशेष रूप मे विकसित करने की योजना शुरू की गई है।

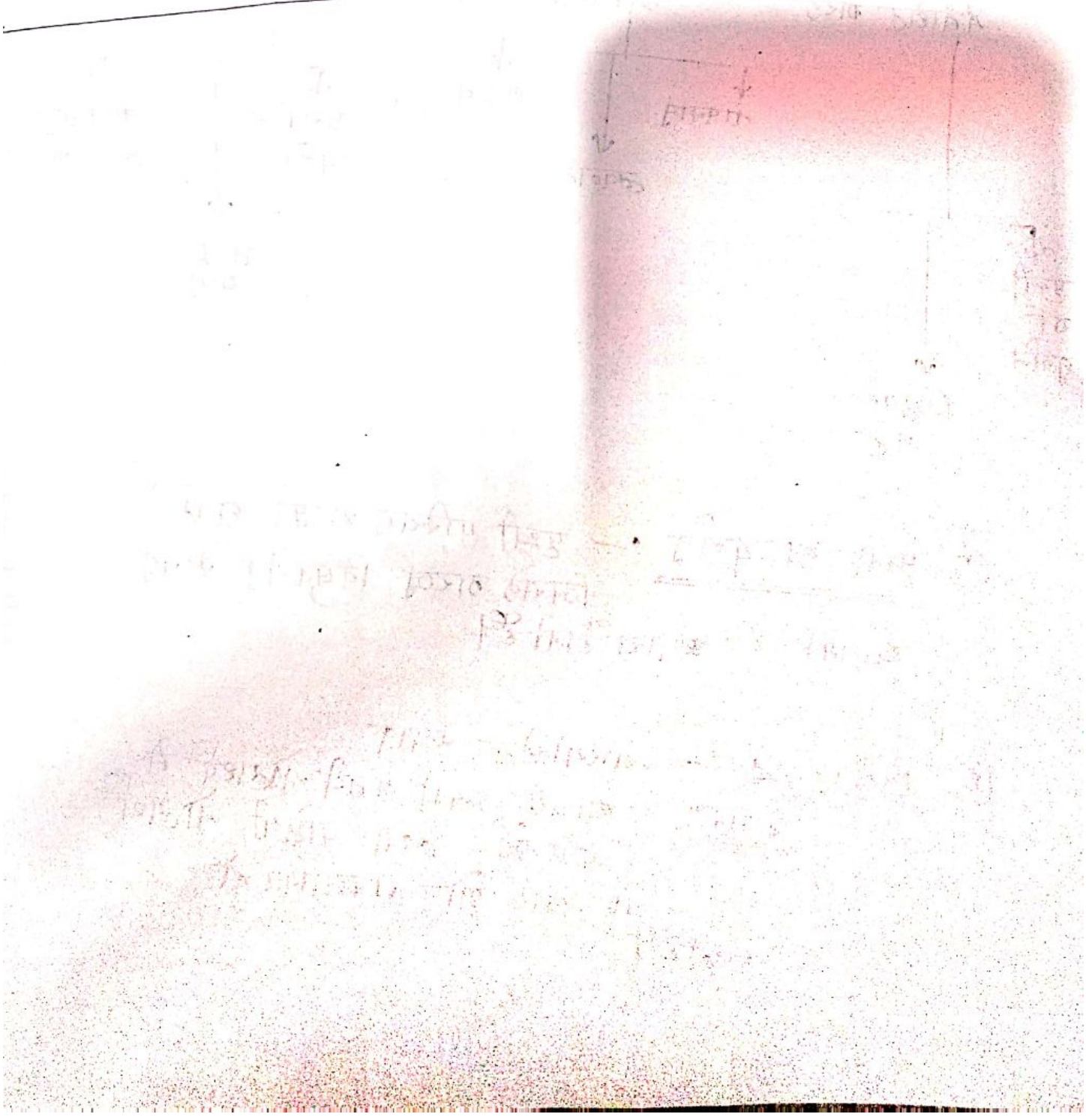

Scanned by CamScanner

38

एक नियत दिशा तथा मार्ग से होकर महासागरीय जल के प्रवाहित होने की गति को महासागरीय धारा कहते है।

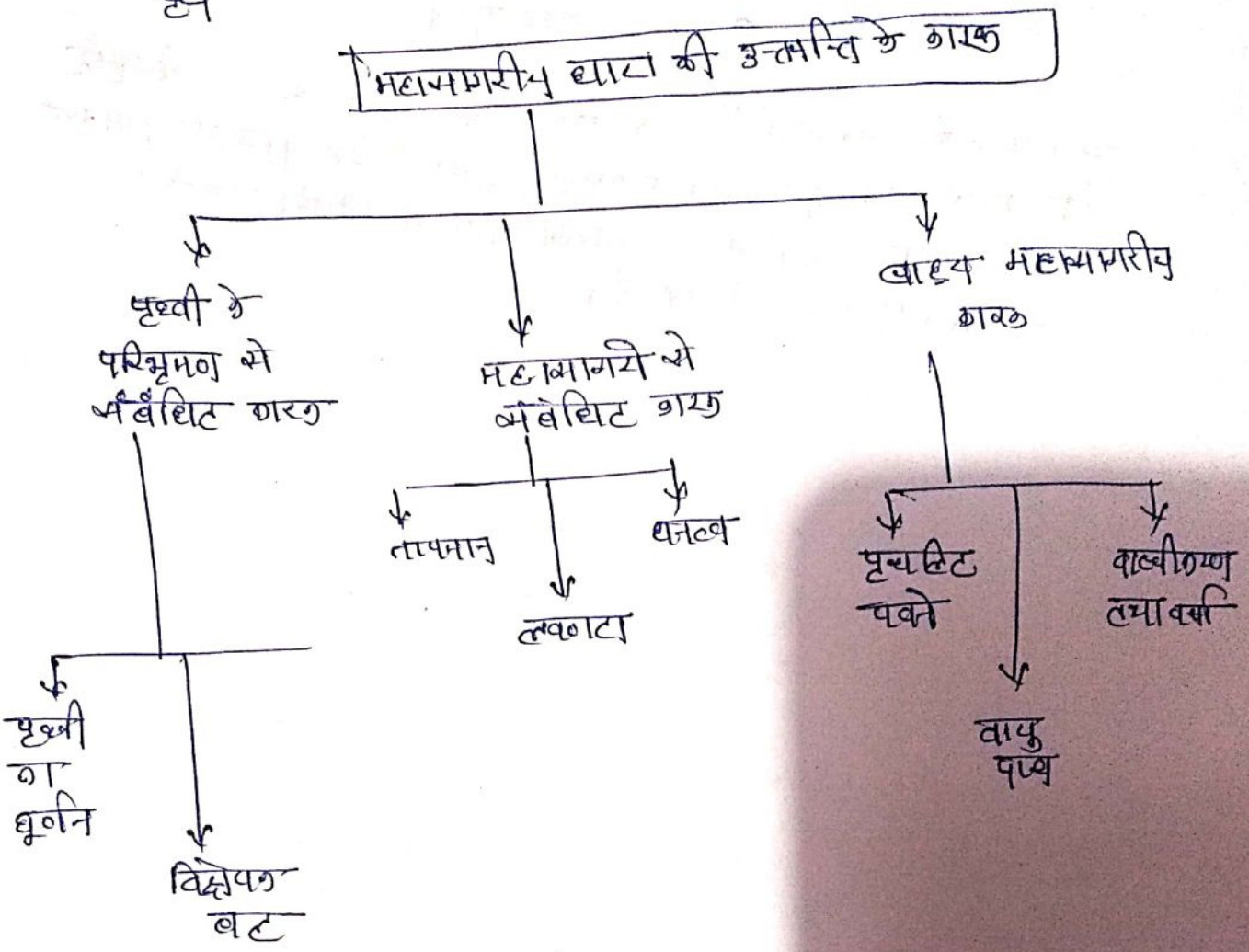

① <u>पृथ्वी का घूर्णन</u> :- पृथ्वी पश्चिम से पूर्व घूमती है जिसके कारण विषुवतीय रेखीय धाराओं की उत्पत्ति होती है।

② <u>विक्षेपक बल</u> :- कोरियोलिस प्रभाव

<u>प्रभाव</u> :- धाराएँ अपनी उत्तरी गोलार्द्ध मे दाएँ ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध मे बाएँ ओर विस्थापित हो जाती है।

महासागर से संबंधित कारक

(1) तापमान :— तापमान मे अंतर के कारण ~~जलधारा~~ महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति होती है।

प्रभाव :— ध्रुवों से विषुवत रेखा की ओर ~~धारा~~ प्रवाह

(2) लवणता :—

प्रभाव ⇒ महासागरीय जलधारा अधिक लवणता से कम लवणता की ओर प्रवाहित होगी अधिक

(3) घनत्व :—

प्रभाव ⇒ कम घनत्व से अधिक घनत्व की ओर धाराओं का प्रवाह

बाह्य ~~कारक~~ महासागरीय कारक

(1) प्रचलित पवनें :—

प्रभाव :– उष्णकटिबंधीय क्षेत्र — धाराएँ पूर्व दिशा मे प्रवाहित होती हैं

विषुवत :— पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाह

(2) वायु दाब :—

प्रभाव ⇒ कम वायु दाब से अधिक वायु दाब की ओर धारा का प्रवाह

(3) वाष्पीकरण तथा वर्षा :—

प्रभाव :— अधिक वर्षा क्षेत्र से कम वर्षा क्षेत्र की ओर प्रवाह।

Scanned by CamScanner

महासागरीय धारा की उत्पत्ति के कारण इसकी गति की दशा को प्रभावित करते है।

(3 D)

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात :- उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रो मे वायुदाब मे अंतर के कारण जब केंद्र मे निम्न वायु दाब का क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है एवं इसके चारो ओर उच्च समदाब रहता है, तो वायु चक्राकार प्रतिरूप बनाते हुए उच्चदाब से निम्नदाब केंद्र की ओर तेजी से चलने लगती है, इसे ही चक्रवात कहते है।

विध्वंसकारी प्रभाव :—

सामाजिक :— चक्रवातो से तेज वर्षा व आंधी आती है।
→ जन-धन की भारी हानि होती है।
→ ~~परिवारो~~ -

आर्थिक ⇒
> कृषि क्षेत्र प्रभावित होता है।
> पालतू पशुओ आदि को नुकसान।
> नाव क्षतिग्रस्त हो जाती है।
> पर्यटन स्थलो पर जल वर्षा या आंधी से पर्यटन स्थलो को नुकसान।

पर्यावरणीय
> पेड़-पौधो के टूटने से ~~क्षय~~।
> चक्रवात के तीव्र होने से सागरीय लहरे तटीय क्षेत्रो मे प्रवेश कर तटीय पर्यावरण को प्रभावित करती है।
> मैंग्रोव वनो को नुकसान

Scanned by CamScanner

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात को कम करने के लिए ~~[illegible]~~ दो-स्तरीय संरचना का पालन करना चाहिए।

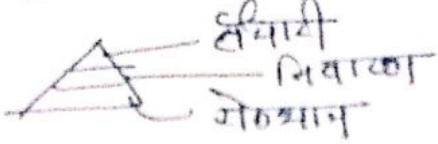

① आपदा पूर्व — तैयारी, निवारण, रोकथाम

② आपदा उपरांत
① बचाव
② क्षतिपूर्ति
③ पुनर्वास

① आपदा पूर्व :— आपदा पूर्व प्रबंधन द्वारा चक्रवात से होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।

① तैयारी :— ① चक्रवातों की दिशा व स्थिति की जानकारी के लिए आधुनिक तकनीकी का प्रयोग

② निवारण :— आपदा प्रभावित क्षेत्रों में नियोजित प्लानिंग

③ रोकथाम :— मैंग्रोव वनों का रोपण।

② आपदा उपरांत :—

① बचाव :— आपदा प्रभावित लोगों [illegible] से बाहर निकालना व निकट शरणस्थल पहुँचाना।

② क्षतिपूर्ति :— सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक क्षतिपूर्ति हेतु [illegible]।

③ पुनर्वास :— आधारभूत संरचना, सड़क, रेल, व्यावसायिक इमारतों की मरम्मत व निर्माण।

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात विनाशकारी आपदा है किन्तु इसके प्रभावों को बचाव उपायों द्वारा नगण्य किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

(ग)

[9A] प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत द्वारा समुद्री तल प्रसार महाद्वीपीय विस्थापन, भूकंप, पृथ्वी तल पर उच्चावच ज्वालामुखी क्रिया आदि की व्याख्या की जा सकती है। प्रतिपादक :— मॉर्गन मैकेंजी, हैरी हेस आदि महत्वपूर्ण है।

<u>प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत</u>:— पृथ्वी का भूपटल 6 बड़ी तथा 6 छोटी प्लेटो से मिलकर बना है जो लगातार गतिशील है।

इनकी प्लेटो के किनारो के द्वारा ही कई महत्वपूर्ण तथ्यो की व्याख्या की जा सकती है

| प्लेटो के किनारे |

रचनात्मक किनारा — विनाशात्मक किनारा — संरक्षी किनारा

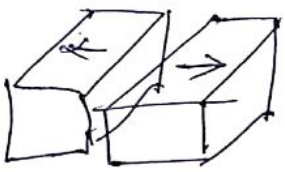

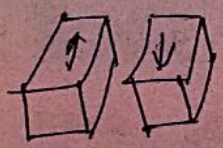

* प्लेटो की <u>अपसारी गति के कारण</u> ज्वालामुखी, सागर तल प्रसार, ~~ज्वालामुखी महाद्वीप (अंतर्महाद्वीप),~~ ~~की उत्पत्ति की~~

+ प्लेटो की अभिसारी गति → भूकंप, वलित पर्वत, ज्वालामुखी द्वीपो

+ दो प्लेटे एक दूसरे के क्षैतिज दिशा मे प्रवाहित होती + भूकंप

प्लेट विवर्तनिकी वर्तमान मे सर्वमान्य सिद्धांत है जिससे पृथ्वी के कई तथ्यो की पुष्टि होती है।

प्र॰

2D) नदी अपने नदी बेसिन मे अपरदन व निक्षेपण क्रिया द्वारा कई स्थलाकृतियो का निर्माण करती है जिनका विवरण निम्न है —

अपरदन द्वारा ~~निर्मित~~ निर्मित स्थलाकृति ⇒ अपने तीव्र प्रवाह व अवक्षय गर्को द्वारा स्थालाकृति का निर्माण करती है —

- V आकार की घाटी
- जल प्रपात
- नदी विसर्प

- कैनियन

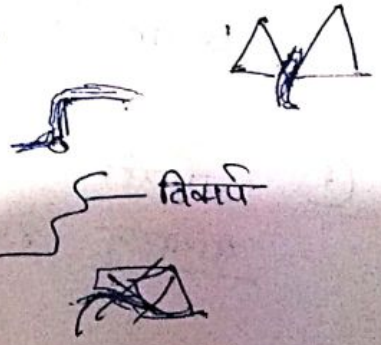

निक्षेपण द्वारा निर्मित स्थलाकृति ⇒ अपने साथ ~~साथ~~ अपरदन क्रिया द्वारा लाए गए निक्षेपो का निक्षेपण के द्वारा निर्मित। —

- जलोढ़ पंख
- गोखुर झील

- प्राकृतिक तटबंध
- डेल्टा

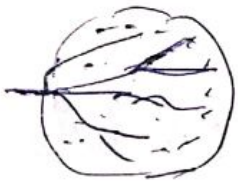

नदी द्वारा अपने मार्ग मे बनी स्थलाकृतियाँ इसकी बाल, युवा, प्रौढ़ अवस्था को प्रकट करती है।

Scanned by CamScanner

भारत के उत्तर मे पश्चिम को पूर्व सिंधु, गंगा ब्रह्मपुत्र नदियाँ व उनकी सहायक नदियो द्वारा बनाए गए विशाल उपजाऊ मैदान का महत्व नि: लि० है:—

1. नदियो तथा उनकी सहायक नदियो द्वारा लाए गए निक्षेपो के जमा होने से सर्वाधिक उपजाऊ जलोढ़ मैदान का निर्माण होता है।

2. नदियो की उपस्थिति उस क्षेत्र मे सस्ता परिवहन उपलब्ध कराती है।

3. भारत की करीब 30% जनसंख्या का निवास स्थल।

4. धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल, बद्रीनाथ, केदारनाथ, वाराणसी की उपस्थिति।

5. महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर जैसे दिल्ली, कोलकाता कानपुर, लखनऊ की उपस्थिति।

उत्तर भारत के मैदान भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योकि यह न सिर्फ आधारो से समृद्ध है अपितु, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

Scanned by CamScanner

(क्रम)

2D ~~जल संसाधनों का संरक्षण किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण क्योंकि~~

2D जल के स्रोतों के निरंतर ह्रास एवं जल की बढ़ती मांग मांग के कारण जल संसाधनों का संरक्षण समय की मांग है।

जल संरक्षण के प्रमुख तत्व

1. पूर्व से मौजूद जल स्रोतों का संरक्षण।
2. लुप्तप्राय नदियों का पुनर्जीर्णोद्धार करना।
3. वनों का रोपण।
4. जल संरक्षण के लिए जन आंदोलन।
5. सिंचाई व्यवस्था को कुशल बनाना।
6. नदियों को प्रदूषित जल के प्रवाहित होने को तकनीकी द्वारा कम करना।

निःसंदेह 'जल ही जीवन' है अतः जल संसाधनों का संरक्षण इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

Scanned by CamScanner

भूस्खलन प्राकृतिक एवं मानव प्रेरित घटना है जिसमे ढलान के सहारे मलवा या शैल खण्ड बड़ी मात्रा मे ऊपर से नीचे की ओर गिरने लगता है जिसके कारण जान-माल की भारी हानि होती है।

भूस्खलन को कम करने के उपाय

- भूस्खलन से पीड़ित क्षेत्रों का आंकलन कर सुभेद्यता मानचित्र तैयार करना।
- सुभेद्य क्षेत्रों मे खनन, निर्माण आदि पर पूर्णरूप प्रतिबंध लगाना।
- बड़े डैम, बाँध आदि के निर्माण की जगह छोटे-छोटे चैक डेम बनाना।
- अत्यधिक सुभेद्य क्षेत्रों मे रिटेनिंग दिवार का निर्माण करना।
- जनसंख्या का सीमित अधिवास / प्रवेश।

भूस्खलन के प्रकोप को बेहतर प्रबंधन द्वारा न्यून किया जा सकता है।

2F

आपदा के प्रबंध के लिए 1994 में जापान के शहर के योकोहामा में योकोहामा रणनीति का अपनाया गया जो आधोलिखित है —

① आपदा प्रबंधन तथा न्यूनीकरण के लिए व्यापक नीतियाँ / कार्ययोजना बनाना।

② आपदा पूर्व तैयारी करना तथा क्षमता विकास

③ आपदा के निवारक उपायों का अनुसंधान

④ आपदा के बारे में शिक्षा व लोगों को बचाव हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना

⑤ प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा आपदा के प्रकोप को कम करना।

आपदा प्रबंधन हेतु 'योकोहामा रणनीति' एक 'स्पष्ट एवं, सरल' एवं बेहतर रूप से आपदाओं के निवारण का रास्ता बताती थी।

Scanned by CamScanner

हरित क्रांति भारत मे 1960 के दशक मे कृषि क्षेत्र मे एम. एस. स्वामीनाथन लाया गया अत्याधुनिक कृषि व्यवहार था जिसने खाद्यान्न ~~उत्पन्न~~ उत्पादन बढाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हरित क्रांति से उत्पन्न समस्याएँ

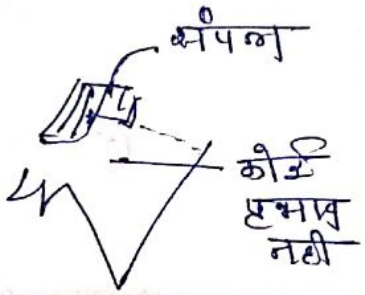

(F) हरित क्रांति मे क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न की।

(F) हरित क्रांति का लाभ बडे किसानो को मिला

(F) हरित क्रांति सीमित फसलो जैसे गेहूं, चावल तक रही।

(F) अधिक सिंचाई व उर्वरकों के कारण दीर्घकालिक रूप से कृषि उत्पादन को कम किया।

(F) पारंपरिक फसलो पर संकट।

हर सिक्के के दो पहलू होते है वैसे ही हरित क्रांति के दो पहलू है जिसने तात्कालिक संपन्नता तो दी किन्तु दीर्घकालिक रूप से इसने ~~भारतीय~~ कृषि व्यवस्था को जर्जर कर दिया।

(2 I) म० प्र० के कृषि क्षेत्रों को 11 जलवायु प्रदेशों में बाँट गया है। जिसमें प्रमुख कृषि क्षेत्रों का वर्णन अधोलिखित है —

(1) मालवा पठार ⇒

फसल क्षेत्र :— कपास, ज्वार, गेहूँ
मिट्टी :— मध्यम काली
वर्षा :— 800 – 1200 मि.मी.
क्षेत्र विस्तार :— इंदौर, उज्जैन, मिदीर, देवास, शाजापुर

(2) नर्मदा घाटी क्षेत्र

फसल क्षेत्र :— गेहूँ
मिट्टी :— गहरी काली
वर्षा :— 1200 – 1600 मि.मी.
क्षेत्र विस्तार :— नरसिंहपुर, होशंगाबाद, जबलपुर

(3) विंध्य पर्वत क्षेत्र

फसल क्षेत्र — गेहूँ
मिट्टी :— मध्यम व गहरी काली
वर्षा :— 1200 से 1400 मि.मी.
क्षेत्र विस्तार :— भोपाल, विदिशा, रायसेन, सिहोर

म० प्र० मे आधुनिक तकनीकों व पद्धति द्वारा कृषि को और भी ~~विक~~ समृद्ध बनाया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

२५

बुन्देलखण्ड का पठार म०प्र० के पूर्व व उत्तर पूर्व मे स्थित है जिसका आर्थिक महत्व का विश्लेषण निम्न शीर्षकों के अंतर्गत कर सकते है

आर्थिक महत्व

(1) खनिज :- हीरा, ग्रेनाइट, चीड़, सील आदि के अवशेष
फॉस्फेट, हीयक डोलामाइट आदि खनिजो का भंडार

(2) जल संसाधन :- केन, बेतवा, टोंस, धसान आदि नदियो की प्रचुरता।
राजघाट, मजाबीरा बांध

(3) वन उत्पादन :- पन्ना - छतरपुर, दमोह, सागर मे सागौन, शीशम, खैर, तेंदू पत्ता वनो की उपलब्धता

(4) पर्यटन :- छतरपुर मे खजुराहो, ओरछा (निवाड़ी) चित्रकूट आदि प्रमुख पर्यटकों की उपस्थिति।

बुन्देलखण्ड मे आर्थिक महत्व के अनेक संसाधन मौजूद है, किन्तु उनका अवैज्ञानिक दोहन व भ्रष्टाचार ने उन संसाधनो के महत्व को न्यून कर दिया है

Scanned by CamScanner

25

किसी क्षेत्र के मृदा आवरण का नष्ट होना ही मृदा अपरदन कहलाता है यह प्राकृतिक व मानवजनित हो सकता है किन्तु मानव ने अपने हस्तक्षेप द्वारा मानव मृदा अपरदन को बढ़ा दिया है—

1. वनों का अत्यधिक दोहन।
2. मृदा पर अवैज्ञानिक संरचनाओं के कारण प्राकृतिक ड्रेनेज सिस्टम को बाधित करना।
3. व्यापक स्तर पर रासायनिक भूमि का उपयोग
4. नदियों के बेड पर रेतो का भण्डारण व अत्यधिक दोहन
5. मृदा अपरदन को मानव द्वारा आपदा न मानना क्योंकि उसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है, कि ~~मानव~~ मृदा अपरदन मुख्यतः मानव जनित है जिसने ~~इसकी~~ अपने हस्तक्षेप द्वारा इसे तीव्रगामी कर दिया है।

Scanned by CamScanner